श्री आनंद कल्याण

वि.सं. २०७१ - जेठ सुद - ७ • दि. २५ मई, २०१५ • अंक-१

2

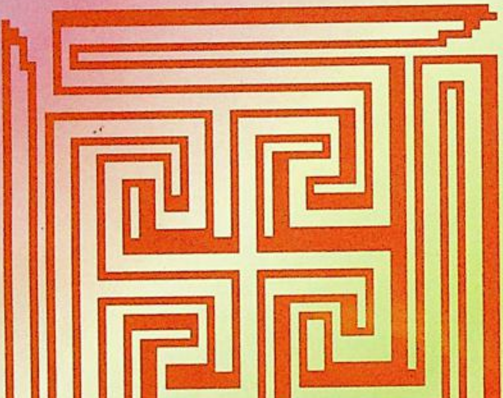

शेठ आणंदजी कल्याणजी ट्रस्ट

अहमदाबाद

सम्मेतशिखर महातीर्थ स्थित जलमंदिर का संपूर्ण रंगकाम होने के पश्यात का मनोहारी द्रश्य

"श्री आनंद कल्याण" (त्रिमासिक पत्र)

(धार्मिक धर्मादा ट्रस्ट रजि नं. ए-१२९९/अहमदाबाद)

वर्ष : १ अंक : २ कींमत : ₹ २० वार्षिक शुल्क : ₹ १००

श्री मक्षी पार्श्वनाथ स्तवना

मक्षी पार्श्वनाथप्रभु की महिमा जग में सब से न्यारी है
संघ चतुर्विध भक्ति सभर हो पार्श्वप्रभु पर वारी है ।

संग्राम सोनी नामक श्रेष्ठि ने जिनमंदिर की स्थापना की
महिमा तीर्थ का बढता ही चले, यही तो उनकी भावना थी ।

विक्रम संवत चौदहसों बहत्तर में यहाँ प्रतिष्ठा हुई,
सोमसुन्दर सूरिजी के हाथों साधनासभर तितिक्षा हुई ।

खूबसूरती के दरिये सी मोहक मूर्ति का क्या कहना ?
मालवांचल क्या मक्षीजी तो पूरे भारत का गहना !

श्यामल वरण शोभित है जैसे जलद-घटा हो सावन की
दर्शन की शुभ घडिया मानो, अंखियन प्यास बुझावन की ।

उच्च शिखर पर ध्वज लहराये सब को जैसे निमंत्रण दे ।
यात्रा कर के सफल बना लो, सपने अपने जीवन के !

छत्तीस देवकुलिकाओं में छोटी बड़ी प्रतिमाजी है,
देवविमान सा भव्य नजारा देख के सब दिल राजी है ।

पार्श्वयक्ष, माणीभद्रवीर और क्षेत्रपाल महिमाशाली
भक्तों की मनोकामना पूरे तीर्थ की करते रखवाली ।

प्रभु के चरण में, प्रभु की शरण में, चले आओ सब भाव से
जीवन धन्य बना लो अपना प्रभु भक्ति के प्रभाव से ।

दर्शन-पूजन-भक्ति कर के ध्यान करो दिला ला कर के
भीतर को आलोकित कर लो, स्नेह के दीप जला कर के ।

वि.सं. २०७१, जेठ — भद्रबाहु विजय

: प्रकाशक :

शेठ आणंदजी कल्याणजी ट्रस्ट

श्रेष्ठी लालभाई दलपतभाई भवन,
२५, वसंतकुंज, नवा शारदा मंदिर रोड, पालडी, अहमदाबाद-३८० ००७.

श्री आनंद कल्याण (त्रैमासिक पत्र)

वर्ष : १ | अंक : २

प्रकाशन

वि.सं. २०७१, जेठ सुद-७ • ता. : २५-०५-२०१५, सोमवार

प्रकाशक

महेन्द्रभाई शाह (जनरल मेनेजर)

शेठ आणंदजी कल्याणजी ट्रस्ट

श्रेष्ठी लालभाई दलपतभाई भवन,

२५, वसंतकुंज, नवा शारदा मंदिर रोड, पालडी, अहमदाबाद-३८०००७

दूरभाष : 26644502 – 26645430

E–mail : shree_sangh@yahoo.com / info@anandjikalyanji.com

मुद्रक :

नवनीत प्रिन्टर्स (निकुंज शाह) मोबाईल : ९८२५२६११७७

ध्यान से पढिये ।

प्रस्तुत अंक को श्री आनंदकल्याण अंक-२ के रुप में प्रकाशित किया गया है । हालाँकि इससे पूर्व आनंद कल्याण के दो अंक प्रकाशित हो चुके है । पर सरकारी पंजीयन की प्रक्रिया से गुजरने के बाद **'श्री आनंदकल्याण'** यह नाम समाचारपत्र व पत्रपत्रिका विभाग द्वारा सूचित किया गया है। इसलिये अब से वही आनंद कल्याण... वही सामग्री का चयन, वही प्रस्तुति पर नाम होगा **श्री आनंदकल्याण**।

यह अंक मक्षी तीर्थ में हो रहे प्रतिष्ठा प्रसंग पर तैयार होने से मक्षी तीर्थ से संबधित सामग्री एवं प्रतिष्ठा महोत्सव के आयोजन से जुडी हुई सामग्री से सजा हुआ है ।

अनिवार्य एवं अपरिहार्य कारणों से अंक के प्रकाशन में विलंब हुआ है । अतः क्षमाप्रार्थी है ।

मक्षीतीर्थ का संक्षिप्त इतिहास

मध्यप्रदेश मालवा प्रांत में उज्जैन से पूर्व दिशा की और ४० कि.मी. की दूरी पर शाजापुर जिल्ले में रेलवे स्टेशन से ०.५ कि.मी. की दूरी पर नेशनल हाईवे जी.टी. रोड पर मक्षी गाँव है। यहां श्वेताम्बर परम्परा का मक्षीजी पार्श्वनाथ का विशाल भव्य जिनमंदिर है। इस मंदिर का निर्माण विक्रम संवत १४७२ (इस्वीसन १४१६)में हुआ था। मूलनायक मक्षीजी पार्श्वनाथ की श्याम रंग की विशाल प्रतिमा पन्द्रहसों वर्ष से भी ज्यादा प्राचीन है। यहा प्रतिमा रेत (सेन्ड्स्टोन) की बनी हुई है। मंदिर के नीचे के भूमिगृह-तलघर से यह प्रतिमाजी प्रगट हुई थी। प्रागट्य के मूलस्थान पर संगमरमर का चौंतरा बना दिया गया था।

इस मंदिर के निर्माता मांडवगढ़ के तत्कालीन मालवा राज्य के कोशाध्यक्ष संग्राम सोनी ने मक्षी पार्श्वनाथ की पावनकारी प्रतिमा अपने महान उपकारी गुरुदेव आचार्य श्री सोमसुंदरसूरीश्वरजी के वरद्हस्त से प्रतिष्ठित करवायी थी। बाद में मंदिर जीर्ण होने से बरसों बाद लाखों रुपए खर्च कर श्वेताम्बर जैन संघ ने भव्य जिनमंदिर बनवाया। गोलाकार आसन पर बिराजमान इस प्रतिमा के ईर्दगिर्द चंवर लिए हुए इन्द्रों और अन्य देवदेवियां की मूर्तियां है। प्रतिमा के उपर कटिसूत्र, वस्त्रपट्ट एवं श्रीवत्स के अंकन है। प्रतिमा पर सर्प के सात फेन (फणा) फैले हुए हैं। जिसके आसपास दो गजराज भी अंकित है। प्रतिमाजी के नीचे सर्प का चिन्ह अंकित है। मूलनायक परमात्मा की श्याम रंग की यह प्रतिमा अत्यंत मनोहारी, आकर्षक एवं नयनरम्य प्रतीत होती है। दर्शन करते ही भावुक भक्त अलग ही भावलोक में पहुंच जाते है। मूलनायक भगवान की बांयी और बाईसवें तीर्थंकर अरिष्टनेमि (नेमिनाथ) की श्यामरंगी प्रतिमा है, जब कि दांयी और चिंतामणी पार्श्वनाथ की श्यामवर्णीय चित्ताकर्षक प्रतिमा है। इस के उपरांत अन्य भी अनेक प्रतिमाएं यहाँ पर बिराजमान है। मूलनायक भगवान के बराबर नीचे के हिस्से

में पार्श्वयक्ष की एक चमत्कारिक प्रतिमा स्थापित है । इसके साथ चमत्कारी घटना जुडी हुई है । सभामंडप में माणीभद्रवीर, चक्रेश्वरीदेवी, पद्मावतीदेवी, पार्श्वयक्ष वगैरह प्रतिमाएं भी हैं। सभामंडप के बीच के दरवाजे के उपरी हिस्से में पार्श्वनाथ भगवान की नन्ही सी प्रतिमा उत्कीर्ण है । माणीभद्रवीर की मूर्ति के समीप मूलनायक पार्श्वनाथ भगवान के लेप से पूर्व की और लेप से पश्चात की तस्वीरें रखी गयी थी । गर्भगृह में, माणीभद्रवीर एवं पद्मावतीजी के पास अखंड ज्योत जलती रहती है।

मुख्य मंदिर की परिक्रमा-प्रदक्षिणा पथ में पूर्व में ४२ (बंयालीस) देवरिया थी । वर्तमान में वहां कुल ३९ देवकुलिकाओं का जीर्णोद्धारित करके पुन निर्मित की गयी है जो कि अत्यंत मनोहारी एवं आकर्षक बनी है । इन देवकुलिकाओं में विभिन्न तीर्थंकर परमात्मा की प्रतिमाएं, अधिष्ठायक एवं अन्य प्रतिमाएं बिराजमान होगी । मूलनायक सहित तमाम जिन प्रतिमाजी की प्रतिदिन अष्टप्रकारी पूजा की जाती है। मंदिर में प्रतिष्ठित अधिकांश प्रतिमाओं पर प्रायः १५४८ के शिलालेख अंकित है ।

मुख्य मंदिर का पचहत्तर फीट ऊँचा शिखर, इस तीर्थ का प्रमुख आकर्षण है जो कि २-३ कि.मी. दूर से ही यात्रिक भाई बहनों को अपनी और बरबस आकर्षित करता है। इस भव्य शिखर की स्थापना वि.सं. १९१३ इस्वीसन १८५७ में कार्तिक शुक्ला-१३ के दिन, सोमवार को उज्जैन निवासी श्रावकरत्न श्री उदयचन्दभाई ने तपागच्छीय परम्परा के भट्टारक शिरोमणी देवेन्द्रसूरिजी की परम्परा के मुनिश्री कल्याणविजयजी के करकमलों के द्वारा संपन्न करवायी ।

वि.सं. १४७२ से संवत १९३८ (इस्वी सन-१४१६ से १८८९) तक का इतिहास अलग अलग शिलालेखों में उपलब्ध है । मक्षी तीर्थ की जिनप्रतिमाएं, चरणपादुकाएं वगैरह पर संवत १६६७ (इस्वीसन-१६११) से लेकर संवत १९४९ (इस्वीसन-१८९३) तक के समय के अंकित विविध शिलालेख मिलते हैं ।

कुछ एक छोटे-बड़े संघर्षो के अंत में संवत १९३९ (इस्वीसन-१८८२)में सर्वप्रथम श्वेताम्बर-दिगम्बर के बीच एक समाधान-समझोता हुआ, जिसके तहत बड़ा मंदिर श्वेताम्बर व्यवस्थापन में एवं छोटा मंदिर दिगम्बर व्यवस्थापन रहेगा, वैसा स्वीकृत हुआ । समय समय पर छोटे बडे संघर्षां की वजह से इस्वीसन-१९२१ तक मक्षीतीर्थ के प्रबंधन की हालत दिन-ब-दिन बिगडती चली । तब मालवा के संघ-विशेष तौर पर शाजापुर संघ के अग्रणी अहमदाबाद में शासनसम्राट आचार्य भगवंत श्री नेमीसूरीश्वरजी महाराज साहब से मिले और मक्षी तीर्थ की स्थिति बयान की । पूज्य आचार्य भगवंत का प्रभाव समूचे जैन संघ पर था । विशेष तौर पर शेठ आणंदजी कल्याणजी ट्रस्ट के ट्रस्टीगण उन्ही के मार्गदर्शन में संघ-सेवा की, तीर्थरक्षा की प्रवृत्तियां करते थे । आचार्य भगवंत ने अविलम्ब पेढी के ट्रस्टीगण को बुलाया और मक्षी तीर्थ का प्रबंधन अपने हाथ में लेने के लिये जोरदार प्रेरणा दी । इस तरह वि.सं. १९७८ इस्वीसन-१९२२ मगसिर सुद १०, शुक्रवार के दिन शेठ आणंदजी कल्याणजी ने विधिवत मक्षीतीर्थ का प्रबंध अपने अधिकार में ले लिया ।

कुछ महानुभावों ने इस तीर्थ के साथ जुडकर अपनी सेवाए प्रदान की औंर तीर्थ के विकास को आगे बढाया, जिनमें निम्न श्रावकों का योगदान अविस्मरणीय रहा है । सन १८८२ से १९२१ के दौरान १९०२ तक श्री श्वेताम्बर मंदिर-मक्षी का प्रबंधन भाउसाहब गुजराती ने बड़ी कुशलता से किया, तत्पश्चात सेठ करमचंदजी (उज्जैन) सेठ जमनालालजी (शाजापुर) लक्ष्मीचन्दजी भांडावत वगैरह ने तीर्थ विकास में अहम भूमिकाएं निभाई । सन १९२१ में ग्वालियर दरबार के आदेश से श्वेताम्बर-दिगम्बर विवादों को सुलझाने हेतु पंच-कमिटि बनी । इस कमिटी में श्वेताम्बर संघ की और से करमचंदजी (उज्जैन) कलकत्तावाले रायसाहब बाबू बद्रीदासजी के सुपुत्र राजकुमारसिंहजी, सेठ लालचंदजी छाजेड (इंदौर), सेठ सांकलचंदभाई (अहमदाबाद) सेठ

सिद्धराजजी (ग्वालियर) मूलचंदजी ललवानी (भोपाल) वगैरह ने तीर्थ रक्षा व प्रबंधन में योगदान दिया १९४४ से १९६२ तक पंच कमिटि रही तब तक अहमदाबाद के सेठ आणंदजी कल्याणजी ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री चन्द्रकान्तभाई गाँधी (एडवोकेट)ने पंच कमिटि में २२ से २३ बरस तक सेवाएं प्रदान की। इस दौरान अनेक घटनाओं में उनकी सूझबूझ धीरज, कूटनीतिज्ञता, समयसूचकता वगैरह के कारण मक्षी तीर्थ विकास का कार्य आगे बढता ही रहा, तकलीफें आती रही, मुश्किलें छाती रही... लेकिन रास्ते भी आसन न सही, पर निकले अवश्य !

सन १९४४ मैं जैन श्रमण परंपरा के सागर समुदाय के रत्न शासनसुभट उपाध्यायजी श्री धर्मसागरजी म.सा. के उज्जैन चातुर्मास के दौरान उन्होंने अहमदाबाद स्थित आणंदजी कल्याणजी पेढ़ी के अध्यक्ष श्री कस्तुरभाई लालभाई एवं अन्य ट्रस्टियों से जोरदार अनुरोध करके उज्जैन के श्रेष्ठि त्रिकमभाई अमृतलाल शाह को मक्षी तीर्थ के प्रबंधन व व्यवस्थान में लेने को कहा और दि. ०४-०२-१९४४ से श्री त्रिकमभाई मक्षीतीर्थ के प्रबंधन में प्रविष्ट हुए... जुडे तो इस कदर जुडे की पूरी जन्दगी तक मक्षी तीर्थ से जुडी हर छोडी बडी बात में त्रिकमभाई की प्रतिभा अप्रतिम बनकर उभरती रही ।

चाहे न्यायालय के केस हो, स्थानिक कुछ लोगों के समूह की नाराजगी, अकारण विरोध, दबाव का व्यवहार हो, मूलनायक भगवान की प्रतिमा का पुराना लेप दूर करने की प्रक्रिया। (सन १९६१) मूलनायक भगवान के सामने के चौतरे को तोड़कर पार्श्वयक्ष की प्रतिमा का प्रागट्य (२२-११-१९५३), सन १९५३में माणिभद्रवीर की मूर्ति पर का ढेरों सिंदूर... मिट्टी.. चूने को निकालने की कारवाई... इस दौरान ३८ जितने बड़े बड़े थैले भरकर सारी परते हटाई और जैसे ही सब कुछ हटा, ८ से १० इंच के सुन्दर, नाजुक, नयनरम्य माणिभद्र दादा की मूर्ति प्रगट हुई। इस वक्त सैंकड़ों-हजारों लोगों का तांता लग गया इस नजारे को देखने के लिए, आये हुए लोगों ने

माणिभद्रवीर के चरणों में नालियेर-श्रीफल का अंबार खड़ा कर दिया। मक्षी तीर्थ के उन्नति और प्रगति के लिए यह शुभ शुकन थे। १९६५ में जिनमंदिर के शिखर का जीर्णोद्धार प्रारंभ हुआ। १२ महीनों तक यह कार्य चलता रहा। जैन संघ के प्रभावक मुहूर्त विशारद आचार्यभगवंत विजय नंदनसूरिजी महाराज साहब के द्वारा प्रदत्त मंगलकारी शुभ मुहूर्त में दि. २८-०४-१९६६, गुरुवार, वैशाख शुक्ला ८ के दिन सबेरे ९ बजकर-२९मिनिट और २४ सेकंड पर पंन्यासप्रवर श्री लब्धिसागर महाराज साहब की पुण्यनिश्रा में मंदिर के शिखर पर ध्वजदंड चढाने का कार्य संपन्न हुआ। साथ ही उत्तुंग शिखर पर धर्मध्वजा लहरा उठी।

१९७५ में आणंदजी कल्याणजी पेढ़ी के अध्यक्ष श्री कस्तुरभाई लालभाई के वरद हस्त से तीर्थ में नवनिर्मित भोजनालय का उद्‌घाटन संपन्न हुआ और नवीन धर्मशाला हेतु शिलान्यास हुआ।

इस अवसर पर श्री त्रिकमभाई की धर्मपत्नी सुश्राविका श्रीमती मंजुलाबहन के ३००० आयंबिल तप की सुदीर्घ तपश्चर्या का पारणा भी संपन्न हुआ। प्रभु प्रतिमा के लेप कार्य और बाद में खड़ी हुई कानूनी रुकावटें दूर हो... और तीर्थोन्नति हो, इस शुभ भाव से सन १९६१ में मंजुलाबहन ने आयंबिल तप की आराधना प्रारंभ की थी। १४ वर्ष की यह तप साधना सफलता के साथ पूर्ण कर इस श्राविका ने तीर्थभक्ति का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया।

२४ सितम्बर १९७९ के दिन सेठ कस्तूरभाई लालभाई के हाथों मक्षीतीर्थ में नवनिर्मित धर्मशाला को उद्‌घाटन हुआ उस समय अपने कर्तव्य में कस्तूरभाई सेठ ने त्रिकमभाई की मक्षी तीर्थ के प्रति भक्ति एवं प्रबंधन-व्यवस्थापन की सूझबूझ की भरपूर प्रशंसा की, अनुमोदना की, श्री श्रेणिकभाई ने भी त्रिकमभाई की सेवाओं को काफी सराहा। मक्षी तीर्थ और त्रिकमभाई दोनों एकाकार हो उठे। मक्षी तीर्थ के पिछले ५० बरसों के इतिहास में

त्रिकमभाई तीर्थरक्षण के लिए हर मुश्किल के सामने चट्टान बनकर अडिग खडे रहे। बरसों तक अलग अलग कोर्टो में चल रहे श्वेताम्बर दिगम्बर विवादों का निपटारा भी दि. २२-११-२००७ को दोनों पक्षों के बीच समझोते के तहत हुआ, जिस पर शाजापुर न्यायालय ने सहमति की मुहर लगाई ।

इन दिनों इस तीर्थ में अनेक तरह के विकास कार्य चल रहे है। मंदिर परिसर में नवनिर्मित देवकुलिकाओं के कारण समूचा मंदिर देवविमान सा प्रतीत हो रहा है। यात्रिको के लिए सुविधाएं उपलब्ध करवाने हेतु ट्रस्ट पूरी तरह से सक्रिय है ।

जय हो मक्षी तीर्थ की

जय हो मक्षी पार्श्वनाथ की

वरसीतप के पारणे का आयोजन

इस वर्ष अक्षयतृतीय के दिन ता. २१-०४-२०१५ को शत्रुंजयगिरि महातीर्थ पर दादा के दर्शन-पूजन-स्तवन कर के तलेटी में स्थित पारणा-भवन-मंडप के विशाल प्रांगण में पूज्य आचार्य भगवंत श्री जिनचंद्रसागरजी महाराज साहब, आचार्य भगवंत श्री अक्षयबोधिसुरीश्वरजी महाराज साहब वगैरह आचार्य भगवंत, पू. साधु-साध्वीजी भगवंत की पावन निश्रा में ६०० जितने वर्षीतप के तपस्वीओं को इक्षुरस का पान करवा के पारणा करवाने का लाभ मद्रास के उदारमना श्रीमती मनोरीबाई कंवरलालजी वैद (ह. विजयराजजी और पारसमलजी) फलोदी-राजस्थान, हाल : चेन्नई वालो ने लिया था । इस प्रसंग पर ३ दिन के सकल संघ के स्वामीवात्सल्य का आयोजन किया गया था ।

अति प्राचीन श्री मक्षी पार्श्वनाथ महातीर्थ में भव्यातिभव्य प्रतिष्ठा महोत्सव

भारतवर्ष एवं मध्यप्रदेश का सबसे प्राचीन तीर्थ श्री मक्षी पार्श्वनाथ है, जहां प्रतिवर्ष हजारो तीर्थयात्री प्रभु पार्श्वनाथ के दर्शन-पूजन-यात्रा करके स्व-जीवन को कृतार्थ करते है प्राचीन समय से श्वेतांबर मुख्य जिनालय के तीनों तरफ देवकुलिकाए बनी हुई थी जो समय के साथ जीर्ण शीर्ण होने पर श्री मक्षी पार्श्वनाथ तीर्थ की रक्षा एवं व्यवस्था आदि का संपूर्ण संचालन करने वाली समस्त जैन श्वे.मू.पू. संघ की प्रतिनिधि **शेठ आणंदजी कल्याणजी ट्रस्ट**, अहमदाबाद ने ३९ भव्य आकर्षक शिखरबद्ध देवकुलिका बनाने का निर्णय किया । और पूज्य **अनुयोगाचार्य प्रवर श्री वीररत्नविजयजी म.सा.** की प्रेरणा-मार्गदर्शन में वि.सं. २०६६ आषाढ सुद-१०, शनिवार दि. १२-७-२००८ के दिन मंगल मुहूर्त में भूमिपूजन एवं शिलास्थापन कर जिर्णोद्धार कार्य प्रारंभ किया ।

देवविमान सद्दश तैयार हुई इन देवकुलिकाओं में प्रतिमाजी बिराजमान कराने हेतु विविध बोलियों का आयोजन भी पूज्य **अनुयोगाचार्य प्रवर श्री वीररत्नविजयजी म.सा.** की निश्रा में माणिभद्रवीर महातीर्थ शिवपुर-मातमोर में इसी वर्ष **फागुन सुद-५ दिनांक २१-२-२०१५** शनिवार के दिन हुआ था । पूज्य गुरु भगवंत की प्रेरणा एवं तीर्थ भक्ति से प्रेरित अनेक श्रद्धासंपन्न भाई बहिनों ने उत्साह इसमें भाग लिया । इन देवकुलिकाओ में पूज्य गुरु भगवंत के द्वारा प्रदत्त शुभ मंगल मुहूर्त में प्राचीन व नवीन जिनबिंब एवं शासनरक्षक देव-देवी आराधनार्थ सिद्धचक्र पट वगैरह प्रतिष्ठित करने का भव्यातिभव्य पंचाह्निका प्रतिष्ठा महोत्सव आयोजित किया गया है ।

: श्री मक्षी पार्श्वनाथ महातीर्थ में ऐतिहासिक पंचाह्लिका महोत्सव का पावन मनभावन कार्यक्रम :

जेठ शुक्ला १३, रविवार दिनांक ३१ मई २०१५

प्रथम दिवस

कुंभ स्थापना : श्री रमेशचंद्र जैन परिवार - कनार्दी वाले - मक्षी

अखंड दीपक : श्री नरेन्द्रकुमार जी जैन परिवार, पेंची (जि. गुना)

अष्टमंगल पाटला पूजन : श्री सुरेशचंद्र इन्द्रमलजी बोहरा परिवार, मक्षी

दश दिग्पाल पूजन : श्री इन्दरमलजी शांतिलाल बोहरा परिवार, मक्षी

नवग्रह पाटला पूजन : श्रीमती विजयाबाई बद्रीलालजी श्रीमाल परिवार, मक्षी

नंदावर्त महापूजन : श्री ज्ञानचन्दजी गोलेच्छा परिवार, शाजापुर, मक्षी

प्रातः नवकारशी : डॉ. जी.सी. ओसवाल जैन एवं समस्त जैन ओसवाल बम

सायं स्वामिवात्सल्य : स्व. श्री मदनलाल जैन परिवार, चारवा (जि. हरदा)

जेठ शुक्ला १४ सोमवार, दिनांक ०१ जून २०१५

द्वितीय दिवस

प्रातः नवकारशी : श्री विजयाबाई बद्रीलाल श्रीमाल परिवार, मक्षी

सिद्धचक्र महापूजन : शेठ श्री चोथमलजी नारेलिया परिवार, मक्षी

प्रातः स्वामिवात्सल्य : श्री धर्मचंदजी शांतिलालजी सकलेचा परिवार, रतलाम

सायं स्वामिवात्सल्य : शांतिलालजी जोधावत परिवार, इंदौर

जेठ शुक्ला १५ मंगलवार, दिनांक ०२ जून २०१५

तृतीय दिवस

प्रातः नवकारशी : शेठश्री मंगीलाल रुणवाल एवं

दोपहर श्री माणीभद्रवीर पूजन : श्रीमती लीलाबाई मूणत एवं मूणत परिवार, महिदपुर, मक्षी

प्रातः स्वामिवात्सल्य : शेठ श्री चाँदमलजी चोरडीया परिवार (दातावाले) समस्त रुपवाल परिवार, मक्षी

सायं स्वामिवात्सल्य : श्री भगवानमलजी कटारिया परिवार (दोतावाले)

अषाढ वद १ (गुजराती जेठ वद-०१) बुधवार, दिनांक ३ जून २०१५

चतुर्थ दिवस

प्रभावक रथयात्रा : शेठ शांतिलालजी, सक्लेचा परिवार, रतलाम, पाली (राजस्थान)

दोपहर अठारह अभिषेक : अमृतलाल बोहरा परिवार, पाली (राजस्थान)

प्रातः स्वामिवात्सल्य : शेठश्री जेठमलजी मुलचन्दजी, नाबरिया परिवार

सायं स्वामिवात्सल्य : स्व. श्री मदनलालजी श्रीमाल परिवार, मक्षी

अषाढ वद २ (गुजराती जेठ वद-०२) गुरुवार, दिनांक ४-५-१५

पंचम दिवस

श्री शांतिस्नात्र महापूजन : शेठश्री टीकमचंदजी सरदारमलजी बुरड परिवार

प्रात : श्री वामामाता के थाल का भव्य आयोजन : श्रीमती चमेलीबाई सांचोर, (राज.) मोतीलालजी मूणत परिवार, महिद्पुर

फलेचुंदडी स्वामीवात्सल्य

शेठ सुगनचंदजी तारादेवी

बरडीया परिवार-चेन्नई (ब्रह्मसर) छबडा (राज.)

अषाढ वद ३ (गुजराती जेठ वद-०३) शुक्रवार, दिनांक ५-५-१५

षष्टम् दिवस

प्रातः नवकारशी, दोपहर स्वामीवात्सल्य, दोपहर सत्तरभेदी पूजा

शेठ श्री ओमप्रकाशजी नगजीरामजी परिवार - कोठारी परिवार, शाजापुर

श्रीमती कमलाबेन कांसवा एवं समस्त कांसवा परिवार, मक्षी

प्रतिष्ठा महोत्सव में लाभ लेनेवाले लाभार्थी परिवार

विशिष्ठ सहयोगी / सहयोगी

मातेश्वरी रोशनबाई पुनमचंदजी कोठारी परिवार, इंदौर

श्री कैलाशचन्द्र सालेचा एवं समस्त सालेचा परिवार

श्री हिम्मतलालजी ओधवजी गांधी, इंदौर

श्रीमती शांताबेन वनमालीदास शाह, (सांतेज वाले), अहमदाबाद

मंदिर सज्जा : श्रीमान दुलीचन्दजी गादिया परिवार (ढाबलावाले) मक्षी

पांच दिवसीय चाय व्यवस्था : शेठश्री इन्द्रमलजी मानकुंवरबाई बोहरा परिवार, मक्षी

पांच दिवसीय छाछ व्यवस्था : श्री हुकुमचंदजी सालेचा परिवार, मक्षी

जय जिनेन्द्रके लाभार्थी : श्री इन्दरमलजी अमीचंदजी राठोड परिवार - झाडोली (राज.)

प्रतिष्ठा महोत्सव के निश्रादाता

२१ वर्षीतप के दीर्घ तपस्वी पूज्य आचार्य भगवंत

श्री जिनरत्नसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब

व्याख्यान वाचस्पति पूज्य आचार्य भगवंत

श्री जितरत्नसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब

महातपस्वी पूज्य आचार्य भगवंत

श्री चंद्ररत्नसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब

जैन शासनरत्न पूज्य अनुयोगाचार्य

श्री वीररत्नविजयजी महाराज साहेब

परम तपस्वी पूज्य पंन्यास प्रवर

श्री पद्मभूषण विजयजी महाराज साहेब

व्याख्यानकार मुनिराजश्री

ऋषभचंद्रविजयजी महाराज साहेब

आदि विशाल साधु-साध्वी समुदाय और मालवा प्रांत के विचरमान अन्य पूज्य साधु-साध्वीजी भगवंत

प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं प्रेमपूर्ण मार्गदर्शन

परम पूज्य अनुयोगाचार्य श्री वीररत्नविजयजी म.सा.

मक्षीजी तीर्थ में नवनिर्मित ३९ देवकुलिकाओं की पूरी निर्माण प्रक्रिया, लाभार्थियों को विशेष प्रेरणा, महोत्सव के आयोजन की समूची व्यवस्था वगैरह तमाम कार्य में पूज्य उपकारी गुरुभगवंत के अप्रतिम योगदान के लिए हम नतमस्तक होकर कृतज्ञता भाव अर्पण करते है ।

श्रद्धावनत

शेठ आणंदजी कल्याणजी अहमदाबाद

प्रतिष्ठा महोत्सव के प्रमुख आकर्षण

- वीरमगाव के शहनाईवादक द्वारा सुर सरिता
- भटिंडा (पंजाब) के बैण्ड द्वारा हेरतअंगेज करतब
- मक्षी के संगीत म्युजिक बैण्ड द्वारा भजनों के साथ संगीत की रमझट
- पूना के रंगोलीकार द्वारा जिनमंदिर उपाश्रय एवं रथयात्रा में आकर्षक रंगोली का अद्भूत प्रदर्शन
- रतलाम के सुप्रसिद्ध रजत केटर्स द्वारा प्रतिष्ठा के पांचों दिन सुन्दर-मधुर-रसवती युक्त स्वामिवात्सल्य भोजन व्यवस्था।
- श्री वीररत्न महेंदी परिवार उज्जैन द्वारा हस्त कमल सज्जा
- प्रात : मंगल प्रभातिया / दिन में महापूजन / संध्या में चोवीसी / शाम आरती / रात्रि को रंगारंग प्रभु-भक्ति
- कलात्मक हजारों दीपकों की रोशनी, रंगोली के रंग का मेघधनुष तथा उपाश्रय-जिनमंदिर की अद्भूत सजावट श्री नागेश्वर सजावट ग्रुप, नागेश्वरतीर्थ के द्वारा मालवांचल के सर्वाधिक प्राचीन तीर्थराज श्री मक्षी-पार्श्वनाथ दादा के समस्त तीर्थ संकुल को लाईट पाण्डाल - प्रवेश द्वार-ध्वजा पताका रंगोली रोशनी से सजाया जाएगा।
- एक ही संकुल में शिखरबद्ध ३६ जिनालयों का अनूठा नजारा, जिसे देखकर तन मन जीवन पावन बन बाएगा।
- प्रतिदिन पूज्य गुरु भगवंतों के प्रेरणादायी प्रवचन
- सुप्रसिद्ध विधिकारक श्री जयंतिभाई अमृतलालजी शाह एवं श्री रत्नेशकुमार महेता, एवं श्री हेमंतकुमार वेदमुथा द्वारा प्रतिष्ठा विधान।
- श्री माणीभद्रवीर महापूजन
- जानेमाने गीतकार-संगीतकार नृत्यकार श्री देवेशकुमार जैन, मोहनखेडा श्री मेहुलकुमार रुपाडा, जालना नृत्यकलाकार मोहनलाल, उदयपुर, वगैरह के द्वारा परमात्मा की विविध स्वरुपा भक्ति

मक्षीजी महातीर्थ में नवनिर्मित ३९ देवकुलिकाओं के लाभार्थी

देरी नंबर	प्रतिमाजी का नाम	लाभार्थी के नाम
१.	श्री मणिभद्र एवं श्री पार्श्वयक्ष	श्री रतिलालजी मगनलालजी निलेश परिवार-ब्यारा (गुजरात)
२.	श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ	श्री इंदरमलजी अमिचंदजी राठोड परिवार -पण्डवाडा (मुंबई)
३.	श्री आदीश्वर भगवान	श्री मांगीलालजी सा नवीनभाई मंगलदासजी परिवार -इंदौर (म.प्र.)
४.	श्री अजितनाथ भगवान	श्री सुरेशचंद्रजी मारवाडी परिवार - शाजापुर (म.प्र.)
५.	श्री संभवनाथ भगवान	श्री सुरेशचंद्रजी मारवाडी परिवार - शाजापुर (म.प्र.)
६.	श्री अभिनंदन स्वामी	श्री शारदाबेन गांडालाल शाह परिवार, ह. हेमेन्द्रभाई अश्विनभाई-इंदौर (म.प्र.)
७.	श्री सुमतिनाथ भगवान	श्री दिनेशकुमारीजी केसरीमलजी सालेचा परिवार-शाजापुर(म.प्र.)
८.	श्री पद्मप्रभु स्वामी	श्री कैलाशचन्द्रजी सालेचा परिवार-इंद्रौर (म.प्र.)
९.	श्री सुपार्श्वनाथ भगवान	श्री महेशकुमारजी रतनलालजी वेदमुथा परिवार - शाजापुर (म.प्र.)
१०.	श्री चंद्रप्रभुस्वामी भगवान	श्री फतेहचंदजी वरडिया परिवार - चेन्नई (तमिलनाडु)
११.	श्री सुविधिनाथ स्वामी	श्री महेन्द्रकुमारजी नरेन्द्रकुमारजी कांतिलालजी कटारिया - शाजापुर (म.प्र.)
१२.	श्री शीतलनाथ भगवान	श्री संजयभाई सुरेन्द्रकुमारजी शाह परिवार - अहमदाबाद (गुजरात)
१३.	श्री श्रेयांसनाथ भगवान	श्री पुनिरकुमारजी मनहरलालजी परिवार - सुरत (गुजरात)
१४.	श्री वासुपुज्य स्वामी	श्री पारसमलजी कोठारी परिवार - इंद्रौर (म.प्र.)
१५.	श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ	श्री भुपेन्द्रकुमारजी सुरेन्द्रकुमारजी बेदमुथा परिवार - शाजापुर (म.प्र.)
१६.	श्री पार्श्वनाथ भगवान	श्री प्रतापचंदजी बरडिया परिवार - चेन्नई (तमिलनाडु)
१७.	श्री आदेश्वर भगवान	श्री विमलाबेन रमेशचंद्रजी जयचंद शाह - ह. विजयकुमार परेश-ब्यारा (गुज.)

१८.	श्री नमिनाथ भगवान	श्री नेमीचन्दजी रत्नेशकुमारजी महेता परिवार - इंद्रौर (म.प्र.)
१९.	श्री चंद्रप्रभुस्वामी भगवान	श्री प्रकाशचन्द्रजी एस. छाजेड परिवार - व्यारा (गुजरात)
२०	श्री नेमिनाथ भगवान	श्री सुगनचंदजी बरडिया परिवार - चेन्नई (तमिलनाडु)
२१	श्री पार्श्वनाथ भगवान	श्री ओमरप्रकाश नगजीरामजी कोटारी परिवार - शाजापुर (म.प्र.)
२२.	श्री विमलनाथ भगवान	श्री डॉ. अशोककुमारजी चोपड़ा परिवार, उज्जैन (म.प्र.)
२३.	श्री अनंतनाथ भगवान	श्री विरेन्द्रकुमारजी ठाकुरिया परिवार - इंद्रोर (म.प्र.)
२४.	श्री धर्मनाथ भगवान	श्री सगुनचंदजी बरडिया परिवार - चेन्नई (तमिलनाडु)
२५.	श्री शांतिनाथ भगवान	श्री हेमंतकुमार वेदमुथा परिवार - शाजापुर (म.प्र.)
२६.	श्री कुंथुनाथ भगवान	श्रीमती पुष्पाबेन राकेशकुमारजी परिवार - पाली (राज.)
२७.	श्री अरनाथ भगवान	श्री भरतभाई शाह परिवार - उज्जेन (म.प्र.)
२८.	श्री मल्लीनाथ भगवान	श्री नेमीचन्दजी शांतिलालजी कोठारी परिवार - शाजापुर (म.प्र.)
२९.	श्री मुनिसुव्रतस्वामी	श्री अशोकजी वेदमुथा परिवार - शाजापुर (म.प्र.)
३०.	श्री नमिनाथ भगवान	श्री महेन्द्रकुमारजी चांदमलजी बोहरा परिवार - शाजापुर (म.प्र.)
३१.	श्री नेमिनाथ भगवान	श्री चिंतनभाई झवेरी परिवार - मुंबई
३२.	श्री पार्श्वनाथ भगवान	श्रीमती विजयाबेन बद्रीलालल श्रीमाल परिवार - शाजापुर (म.प्र.)
३३.	श्री महावीरस्वामी भगवान	श्री बंटीभाई शांतिलालजी मदनलालजी शाह परिवार - व्यारा (मुंबई)
३४.	श्री गौतमस्वामी भगवान	श्री नरबतचंदजी शेठ परिवार- दुर्गादेवी स्ट्री, मुंबई
३५.	श्री सीमंधर स्वामी	श्री हिम्मतभाई गांधी परिवार - इंद्रौर (म.प्र.)
३६.	श्री क्षेत्रपाल दादा	श्री दीपकभाई इश्वरलाल शाह परिवार- सुरत (गुजरात)
३७.	श्री पार्श्वनाथ भगवान	श्री जशवंतलालजी रायचन्दजी झागोतर
३८.	श्री पार्श्वनाथ भगवान	श्री हरचन्दजी तेजमलजी झोगातर
३९.	श्री सिद्धचक्र पट्ट	श्री गमनलालजी जीवाजी शाह परिवार - व्यारा (गुजरात)

परम पावन सम्मेत शिखरजी महातीर्थ के यात्रा पथ के रास्तों की मरम्मत एवं रख रखाव

बीस तीर्थंकरों की परम पावन निर्वाणभूमि सम्मेतशैल (पारसनाथ हील) पर स्थित चैत्यालय, जिनमंदिर, चरण पादुका की देरियों के दर्शन-पूजन-वंदन हेतु प्रत्येक जैन के दिल में भारी उत्साह एवं उत्कंठा बनी रहती है। प्रतिवर्ष हजारों की संख्या में श्रद्धा संपन्न स्त्री पुरुष एवं बच्चें इस पावनभूमि की स्पर्शना करने के लिए भारत और विश्व के कोने कोने से दोड़े चले आते है। भक्तिभाव एवं प्रगाट आस्था के साथ वे पर्वत पर चढते हैं। पिछ्ले कुछ अरसों से रास्तों की दुर्दशा की वजह से यात्रिक भाई बहन कठिनाईयों का सामना करना पडता था। विशेष रुप से परम गुरु गौतमस्वामी की टूंक से भगवान श्री चन्द्रप्रभ स्वामी की टूक, वहां से जल मंदिर की ओर जाते हुए खराब रास्ते से लोगों को तकलीफ होती थी।

सम्मेतशिखर महातीर्थ के विकास एवं संरक्षण के लिए सतत प्रयत्नशील शेठ आणंदजी कल्याणजी ट्रस्ट ने संबंधित राज्य अधिकारियों की इजाजत के साथ दिनांक ९-२-२०१५ से रास्तों के सुधार एवं मरम्मत का कार्यवाही प्रारंभ की।

करीबन ७७०५ रनींग फीट रास्ता तात्कालिक सुधार मांग रहा था। भगवान श्री मुनिसुव्रतस्वामी की टूक से भगवानश्री चन्द्रप्रभस्वामी की टूंक तक के रास्ते की मरम्मत चालु हुई! इस कार्यवाही को सभी यात्रिको ने सराही है।

भगवान श्री चन्द्रप्रभ स्वामी की टूक के ८१० रनींग फीट रास्ते के सुधार के साथ ही टूक पर चढने की सीढियों को भी सुव्यवस्थित कर दिया गया है। एक ओर भगवान श्री संभवनाथ की टूक से भगवान श्री आदिनाथ की टूक और भगवान श्री शीतलनाथ, भगवान श्री अनंतनाथ की टूक से भगवान श्री चन्द्रप्रभस्वामी के टूक तक के २१६५ रनींग फीट के रास्ते की मरम्मत हो जाने से यात्रिकों की आवाजाही का मार्ग सरल बन गया है। दूसरी और भगवान श्री संभवनाथ की टूक से जलमंदिर और भगवान श्री अभिनंदन

स्वामी की टूक का रास्ता भलीभांति सुधार दिया गया है।

जलमंदिर के रंग रोगान के काम की प्रक्रिया के प्रारंभ में शिखर घूम्मट वगैरह की साफ सफाई का कार्य एवं रंग लगाने का कार्य अच्छी तरह संपन्न कर दिया गया है। इस से जलमंदिरजी का पूरा नजारा अत्यंत आह्लादक एवं देखते ही बनता है। **(शिखरजी महातीर्थ स्थित शेठ आणंदजी कल्याणजी ट्रस्ट के प्रतिनिधि बिनोदकुमारजी बागचर एवं दीपक मिश्रा के द्वारा उपलब्ध जानकारी पर आधारित)**

शिखरजी महातीर्थ की टूको की बीच के मरम्मत हुए रास्ते।

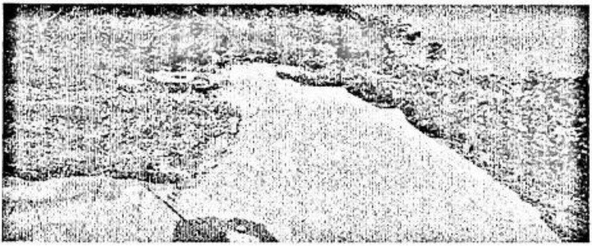

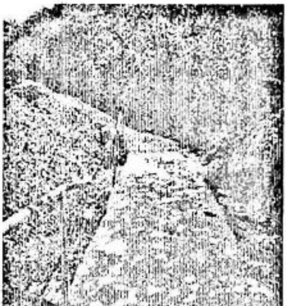

जीर्णोद्धार एवं तीर्थोद्धार के कार्यों का ब्यौरा

पिछले हिसाबी वर्ष (१-४-२०१४ से ३१-३-२०१५) के दौरान आणंदजी कल्याणजी ट्रस्ट ने कुल मिलाकर ५२ जिनमंदिरों के जीर्णोद्धार कार्य में लाभ लेते हुए योगदान दिया जबकि १७ नये जिनमंदिरों के निर्माण में लाभ लिया ।

श्री शत्रुंजय महातीर्थ

- श्री हेमाभाई की टूक में मुख्य जिनालय और प्रदक्षिणा पथ (भमती) जीर्णोद्धार का कार्य पूरा हुआ है ।
- श्री प्रेमचंद मोदी की टूक में मुख्य जिनालय का मठारकार्य (शिल्प पर चढी परतों को हटाना व सफाई करना) एवं फीनीशींग कार्य पूरा कर दिया गया है ।
- श्री कुमारपाल जिनालय का जीर्णोद्धार-कार्य भी पूरा हो गया है ।
- श्री शांतिनाथ भगवान के जिनालय का जीर्णोद्धार कार्य संपूर्ण हुआ है।
- बालाभाई की टूक के भमती के जीर्णोद्धार का कार्य चालु है ।
- जय तलेटी में रंगमंडप की छत पर कलात्मक चित्रकार्य भी पूरा हुआ है ।
- वेलबाई कोठा विस्तार में मठार कार्य और फीनीशिंग कार्य चालु है।
- नेमनाथ की चँवरी के शिखर पर मठार कार्य और फीनीशिंग कार्य भी चालु है
- छीपावसही टूक में श्री नेमिनाथ भगवान के जिनालय एवं अजितशांति देरी के पीछे रायणवृक्ष के नीचे आदीश्वर भगवान की चरणपादुका की देरी के लिए खननविधि दिनांक २० अप्रेल-२०१५ के दिन शुभ मुहुर्त

में पू. आचार्यभगवंतश्री अक्षयबोधिसूरीश्वरजी महाराज एवं. पू. पन्यासजी श्री प्रसन्नचन्द्रसागरजी महाराज की निश्रा में संपन्न हुई ।

- उपर्युक्त जिनालय एवं देरी के शिलान्यास का कार्य भी ११-५-२०१५ के दिन संपन्न हुआ ।
- जशकुंवर जिनालय का कार्य पाँचवें शिखरी तक संपन्न हुआ है ।
- मूछाला महावीर तीर्थ में प्रदक्षिणा पथ में देरियां एवं रंगमंडप में जीर्णोद्धार का कार्य चल रहा है ।

गिरनार महातीर्थ

- जयतलेटी में नौ देवकुलिकाओं का कार्य चालु है ।
- दीक्षाकल्याण एवं केवलज्ञान कल्याणक की भूमि पर देरी का जीर्णोद्धार कार्य संपन्न हुआ है ।
- पर्वत पर श्री कुमारपाल जिनालय और संग्राम सोनी द्वारा निर्मित जिनालय के जीर्णोद्धार का कार्य चालु है ।

श्री कुंभारीया महातीर्थ

- श्री माणीभद्र वीर एवं श्री अंबिकादेवी की देरी का निर्माणकार्य चालु है । छज्जों तक का काम हो गया है ।
- **पेढी की और से पिछले दिनों जिन संस्थानों को जीर्णोद्धार हेतु विशिष्ट सहयोग प्रदान करते हुए लाभ लिया गया उनमें प्रमुख है :**

  श्री जैन श्वेताम्बर सोसायटी : सम्मेतशिखरजी

  श्री शौरीपुरी जैन तीर्थ ट्रस्ट : शौरीपुर

  श्री हठीसिंह केसरीसिंह ट्रस्ट : अहमदाबाद

  श्री उमता जैन श्वे. मूर्ति. संघ : उमता (महेसाना)

तीर्थों के संक्षिप्त समाचार

पिछ्ले महिनों में फरवरी मार्च-अप्रैल-मई-२०१५ के दौरान शाश्वत तीर्थाधिराज शत्रुंजय की यात्रार्थे १,६८,००० (हजार एकलाख अडसठ हजार) जितने भाई-बहन पधारे थे, २५ जितने आचार्य भगवंतों एवं २०० से ज्यादा पूज्य साधु-साध्वीजी महाराज साहब इस तीर्थ की स्पर्शना करके धन्य बने थे । इस दौरान १८ छ'रीपालित संघ इस भूमि की स्पर्शन करने दूर दूर से यहाँ पधारे थे। शत्रुंजय की ९९ यात्रा करके १३०० जितने भाग्यशालियो ने अपूर्व कर्म निर्जरा की थी ।

चैत्र वद (गुजराती फागण वद) ६-७-८ ता. १२-१३-१४ मार्च-२०१५ इन तीन दिनों में त्रिदिवसीय भक्ति महोत्सव सहित गिरिराज पर स्थित जिनप्रतिमाओं एवं चरणपादुकाओं के १८ अभिषेक का भव्य आयोजन रखा गया था । जिसके लाभार्थी थे -

प.पू. आचार्य श्री विजयअशोकसूरि दादा परिवार क

(१) श्रीमती चंपाबेन मनसुखलाल हेमचंद संघवी परिवार

(२) अ.सौ. मायाबेन शांतिलाल मोहनलाल दोशी परिवार

(३) श्रीमती नलिनीबेन शांतिचंद्र बालुभाई झवेरी परिवार, हजारो की तादाद में भावुक भक्तों ने अत्यंत शिस्त और अनुशासनबद्ध ढंग से महोत्सव में हिस्सा लिया था ।

गढ़ गिरनार पर नेमिनाथ दरबार में : गिरनार महा तीर्थ के यात्रार्थ पधारे हुए यात्रिक महानुभावो की संख्या ३१,००० जितनी थी । ५३३ पू. साधु-साध्वीजी भगवंत गढ़ गिरनार पर २२ वे तीर्थंकर नेमिनाथ के ३ कल्याणकों को भूमि को स्पर्शना करने पधारे हुए थे ।

गिरनार महातीर्थ की पावनकारी भूमि पर नेमिनाथ दादा की छत्र छाया में पूज्य आचार्य भगवंत श्री अभयशेखरसूरिजी महाराज साहब आदि मुनि भगवंतों के सानिध्य में गिरनार भक्त के रुप में श्री संघ में आदरभरा स्थान पाने वाले श्री हितेशभाई (बचुभाई) कानजीभाई महेता (वर्तमान : हेमशेखरविजय महाराज साहेब), रोमिलभाई (वर्तमान : पू. ह्रींशेखरविजय महाराज, साहेब), आर्जवभाई (वर्तमान : पू. ऋजुशेखर विजयजी महाराज साहेब) की भागवती दीक्षा ग्रहण का भावसभर आयोजन हुआ था । इस अवसर पर बचुभाई महेता के कल्याण मित्रों के बने हुए समकित ग्रुप के युवानों ने गिरनार तीर्थ विकास की अनेकविध योजनाओ में लाभ

लिया था ।

राणकपुर आदिनाथ के चरणों में... राजस्थान की भूमि के सिंगाररूप श्री राणकपुर महातीर्थ की यात्रार्थे पधारे हुए महानुभावो की संख्या एक लाख बयाशी हजार छ सो अस्सी (१८२६८०) जितनी थी ।

३ आचार्य भगवंत और ६८ पूज्य साधु-साध्वीजी के पावन चरणपगले इस तीर्थभूमि पर हुए थे । जैसे कि जंगम तीर्थ और स्थावर तीर्थ का मनोहारी मिलाप ! १५ संघ इस तीर्थ की यात्रा के लिए पधारे थे । १५ भाई बहनो के वर्षीतप के पारणा का आयोजन भी हुआ था ।

शेरिसा महातीर्थ जो कि अहमदाबाद के नजदीक है और शेरिसा पार्श्वनाथ के अपूर्व महिमा के कारण प्रभावक बना है । उसकी यात्रा करने हेतु पधारे हुए महानुभावों की संख्या २५५९ थी जब कि ६५८ जितने श्रमण-श्रमणी भगवंत इस तीर्थ और तीर्थाधिपति के पावन चरणों में पधारे थे । १२ आचार्य भगवंत यहाँ पधारे थे । वाहनों के द्वारा ९ एवं २ छ'री पालित संघों के आगमन से शेरिसा तीर्थ का विशाल चौक भी उस समय संकरा लगता था।

तारंगा के शिखर से : तारणगिरि तारंगा की तारक (संसार समुद्र से) मारक (मोहासक्ति के लिए) और वारक (वैर विरोध की वासना के लिए) भूमि की स्पर्शना करने के लिए २१००० जितने यात्रिक भाई-बहन, २७५ जितने पूज्य साधु-साध्वीजी भगवंत, ७ आचार्य भगवंत वगैरह पधारे हुए थे । ३० जितने विदेशी पर्यटकों तारंगा के कला और शिल्प मंडित मंदिरों को देखने पहुचे थे । गुजरात की स्कूलो के बच्चे भी बड़ी संख्या में तारंगा पर्यटन के लिए आते है और वर सभी अजितनाथ दादा को देखने, झुकने और वंदना करके अवश्य आते रहते है।

हाल ही मे यहाँ पूज्य ध्यानलीन अध्यात्म के अलगारी अवधूत जैसे आचार्य भगवंत यशोविजयसूरिजी महाराज की पावनकारी निश्रा में नवपद ओली की आराधना के प्रसंग पर सेकडों साधक नवपद की ज्ञान-ध्यान और भक्तिभरी यात्रा में नौ दिन तक मस्त होकर बहिर्भाव से मुक्त बनकर रहे थे ।

मलवा के मक्षी तीर्थ : मालव भूमि के मान-सन्मान और गौरवरूप श्री मक्षीतीर्थ की यात्रार्थे आये हुए महानुभावों की संख्या १८६८० जितनी थी । १८ साधु-साध्वीजी भगवंत मक्षी पार्श्वनाथ के दर्शन-स्तवन करने पधारे हुए थे । जब की १७ जितने संघ वाहनों द्वारा दर्शन-पूजन-भक्ति के लिए दुनियादारी से अलग होकर यहाँ आ पहुचे थे ।

मक्षी महातीर्थ के निर्माता संग्राम सोनी

संग्राम सोनी यह नाम जैन इतिहास में सुप्रसिद्ध है, अमर है ! देशभक्ति, राज्यनिष्ठा, लोकसेवा, साधर्मिक भक्ति, श्रुतभक्ति और जिनभक्ति व गुरु उपासना की जब बात निकलती है तो अनेक नामों के बीच एक नाम उभरता है संग्राम सोनी का !

संग्राम सोनी के पूर्वजों में सांगण सोनी का नाम प्राप्त होता है। वे खंभात के रहनेवाले ओशवाल वंश के शिरोमणी श्रावक माने जाते थे। १४ वीं सदी के आरंभ में खंभात जब जैन परंपरा का समृद्ध केन्द्र बन चुका था। तब वहां उस समय के समर्थ जैनाचार्य देवेन्द्रसूरिजी और आचार्य विजयचन्द्रसूरिजी के बीच कुछ सैद्धांतिक बांतो को लेकर मतभेद पनपने लगे... बढने लगे तब सांगण सेठ ने 'इन दोनों' श्रमण शाखा मे सही और सार्थक शाखा कौन सी है ? इस बात को लेकर पशोपश रही। अपने मन की उलझन को सुलझाने के लिए उन्होने अट्ठम तप करके अधिष्ठायक देव का जाप-ध्यान किया। शासनदेव ने आकर बताया कि 'सांगण, आचार्य श्री देवेन्द्रसूरि वर्तमान युग के समर्थ व उत्तम श्रमण महात्मा है। उनका गच्छ - उनकी परंपरा काफी लम्बे अरसे तक चलेगी। इसलिए तुम उनकी उपासना करना।' फिर सांगण और उसका परिवार, उसके स्वजन सभी आचार्य देवेन्द्रसूरिजी की सेवा में समर्पित हो गये। उन्हे रहने के लिए वसति-स्थान दिये ... श्रमण आचार के अनुकूल सुविधाएं जुटायी। तभी से आचार्य देवेन्द्रसूरिजी की परंपरा 'तपगच्छ की लघु पोशाल' के रुप में प्रसिद्ध हुई। इसके बारे में गुर्वावली के श्लोक १३८/१३९ से जानकारी प्राप्त होती है।

सोनी सांगण यशस्वी था, संपन्न था और सूझबूझ का धनी था। किन्ही कारणों से वि.सं. १३५४, इस्वी १२९८ में सांगण ने खंभात छोड़ा और मालवांचल के मांडवगढ में आकर रहे। दिल्ही उस समय (इस्वीसन १२९८ से १३१६) अलाउद्दीन खिलजी का राज्य था। बाद में मांडवगढ में सोनी परिवार बसते चले और बढते चले। समृद्ध होने के साथ साथ उन्होने राज्यसत्ता में भी अपना सिक्का जमाया। राजाओं के साथ वे उनके मजबूत रिश्तों ने समाज-धर्म और संस्कृति को कुछ हद तक सुरक्षा प्रदान की और प्रगति भी

दी। बाद में तो अनेक सोनी परिवार गुजरात के अलग अलग गांवों से आकर मांडवगढ में बसने लगे।

इसी सांगण सोनी की परंपरा में नरदेव (नारिया) नामक यशस्वी पुरुष हुआ। उसकी सोनाई नामकी पत्नी थी। मांडव में बादशाह हुसंगसेन के दरबार में उसका बड़ा रुतबा था। मान-सन्मान था। वह दानी और उदार था। उसका यश चौतरफ फैल रहा था। उसने मांडव में एक सत्रागार सा बनाया था वहां पर सभी आगतुंकों को तरह तरह की वस्तुएं प्रदान की जाती थी। उसके बारे में एक उल्लेख यह भी मिलता है कि :

खंभात के रहनेवाले सोनी नारिया (नरदेव) के पुत्र पद्मसिंह की पत्नी आल्हगदेवी ने वि.सं. १४३८ में भादरवा सुद ७ के दिन तपागच्छ के आचार्य देवेन्द्रसूरिजी उनके पट्टधर आचार्य सोमसुंदरसूरीजी, आचार्य मुनिसुंदरसूरिजी आचार्य जयचन्द्रसूरिजी, आचार्य भुवनसुंदरसूरिजी के उपदेश से जीरावाला पार्श्वनाथ भगवान के जिनप्रासाद की चौकी का शिखर करवाया था।

उसका एक पुत्र था संग्रामसिंह ! जो संग्राम सोनी के नाम से इतिहास में जाना गया। वह कुछ समय के लिए व्यापार हेतु या अन्य कारणों से गुजरात के तत्कालीन वढियार इलाके के लोलाडा (वर्तमान में सुप्रसिद्ध तीर्थ शंखेश्वर के समीप का गांव) में जाकर रहने के पश्चात् वह मांडवगढ में आकर बसा। उस वक्त मांडव में महमूद खिलजी का शासन था। संग्राम सोनी ने बादशाह के अत्यंत विश्वासु व्यक्तियों में अपनी जगह बना ली थी। इसके पीछे एक मजेदार कहानी इस तरह की है :

'गुजरात के वढियार प्रान्त के लोलाड़ा गाँव से निकलकर संग्रामसिंह सोनी अपनी माता देवा... पत्नी तेजा और पुत्री हांसी के साथ मांडवगढ गया। वहाँ पहुँचने पर वो नगर में प्रवेश कर ही रहा था कि उसने एक अचंभित करनेवाला दृश्य देखा : एक सर्प फैले हुए फन पर दुर्गा पक्षी आकर बैठी हुयी थी और किलकारी मार रही थी। प्रसन्नता जता रही थी। संग्राम इस शुकुन को देखकर जरा ठिठक सा गया। तभी समीप में खड़े एक जानकार व्यक्तिने कहा : 'सेठ, आराम से, निश्चित होकर शहर में प्रवेश करे। यह शुकुन बडी किस्मतवालों को मिलता है। ऐसे शुकुन से शहर में प्रवेश पाने वाला आदमी धन के ढेरों पर रहता है।' और संग्राम सोनी ने अपने पुरखों की

भूमि पर कदम रखा । फिर तो पीछे मुड़कर देखने की फुरसत ही कहां रही ! धीरे धीरे उसने व्यापार वगैरह में अपनी जगह बना ली । एक दिन बादशाह गियासुद्दीन गरमी के दिनों में बगीचे में गया और एक घटादार आम के पेड के तले विश्राम करने लगा । तब उसे माली ने बताया की यह आम तो बांझ है । इस पर फ्ल नही लगते ।' बादशाहने आननफानन माली को हुकम कर दिया कि 'इस पेड को काट देना । बांझ आम की आवश्यकता क्या है ?' संग्रामसिंह तब वही उपस्थित था । उसने हाथ जोड़कर बादशाह से गुजारिश की :

'बादशाह सलामत ! यह आम का पेड तो पैदाईशी बांझ है । आप इसे मुझे बख्शीश कर दे । इसे बख्श दे । इस पेड के जीव को अभयदान देने की रहम करे । हजूर की मेहरबानी होगी और अल्लाताला की मंजूरी होगी तो यह पेड बच जाएगा । इतना ही नहीं अगले मौसम तक इस पर फ्ल भी आ जाएंगे ।'

बादशाह ने तुनककर कहा : 'अगर अगले मौसम में इस आम पर फ्ल नहीं आये तो में जो हाल इस पेड़ का करने जा रहा था, वह हाल में तेरा कर दूंगा ।' सोनी ने सिर झुकाकर सजदा करते हुए बादशाह सलामत की बात मान ली ।

संग्रामसिंह दयालु था, धर्म की परंपरा में पूरी आस्था रखता था । धर्म के प्रभाव से वह परिचित था । उसने आम के पेड तले भगवान की मूर्ति रखकर स्नात्रपूजा पढायी । चंदन-धूप-फ्ल वगैरह अर्पण कर वृक्ष की पूजा की । इसके प्रभाव से उस आम के वृक्ष का अधिष्ठायक देव जाग्रह हुआ और संग्राम पर खुशी जाहिर करते हुए बोला : 'इस आम का जीव पूर्व जन्म में भी बांझ था... और इस जन्मे में भी है... पर तूने इसे अभयदान दिया है। बादशाह से इसकी जान बख्शायी है... इसलिये मैं तेरे पर प्रसन्न हूं । इस पेड की जड के इर्दगिर्द काफी धन गडा पड़ा है । वह सब तू ले ले, वह तेरे नसीब का है । अब यह पेड बांझ नही रहेगा ।'

संग्राम ने पेड के नीचे से सावधानी से धन निकाला और ले गया। कुदरत की करिश्माई कारीगरी कारगर हुई और मौसम के आते ही पूरा पेड आम के फ्ल से लद गया । डालियाँ झुक गयी । संग्राम तो खुशी से नाच

उठा । उसने आम के पके हुए फलो को उतारा और रजत थाल में सजाकर उपर रुमाल ढंक कर सुहागन महिला के सिर पर रखते हुए गाजे बाजे के साथ बादशाह के पास ले गया । बादशाह को नजराने के रुप में आम पेश किये और बताया कि ये उसी बांझ आम के फल है । बादशाह अत्यंत प्रसन्न हो उठा । उसने संग्राम को पाँच सुंदर कीमती वस्त्र इनाम देते हुए अपने महल का कामदार नियुक्त किया। बादशाह ने उसे **नकद-उल-मुल्क** की पदवी भी दी । उपरांत 'जगतविश्राम' बिरुद भी दिया ।

श्री और सरस्वती के साथ उस पर सत्ता की कृपा भी पूरी उतरी । वह स्वयं तपगच्छ की वृद्ध पोशाल के आचार्य रत्नसिंहसूरि के पट्टघर पूर्व में भट्टारक आचार्य उदयवल्लभसूरि का श्रावक था ।

इस्वी १४६२ में वि.सं. १५१८ के जेठ सुद १५ के दिन उसने भगवान अजितनाथ की परिकरवाली जिन प्रतिमा निर्मित की और उसे तपगच्छ की बड़ी पोशाल के आचार्य रत्नसिंहसूरिजी के पट्टधर आचार्य श्री उदयवल्लभसूरि के हाथों प्रतिष्ठा करवायी। इस प्रतिमा के नीचे के हिस्से में वस्त्रपट्ट है... उसके नीचे सो. संग्राम नाम उत्कीर्ण है । मूलनायक भगवान की दोनों और भगवान अजितनाथ की मूर्तियां है । उज्जैन स्थित देश खडकी मोहल्ले में भगवान चन्द्रप्रभ स्वामी का श्वेताम्बर जैन मंदिर है । उसमें भगवान अजितनाथ की श्वेत पाषाण की जो प्रतिमा बिराजमान है, उस की गादी के पिछले हिस्से में उपर्युक्त मतलब की लिखावट है ।

सोनी संग्रामसिंह उन दिनों के प्रौढ प्रतिभाशाली एवं महाप्रभावक आचार्य सोमसुंदरसूरिजी के प्रति प्रगाढ आस्था रखते हुए उनकी आज्ञा पालन को अपने जीवन का श्रेष्ठ कर्तव्य समझते थे । उन्हों ने मांडव में इस्वी १४७२ में भगवान सुपार्श्वनाथ का जिनप्रासाद बनवाया था । (आज भी 'मांडवगढनो राजियो नामे देव सुपास' यह पंक्ति सुप्रसिद्ध है ।)

मक्षीजी तीर्थ में संग्रामसोनी ने पार्श्वनाथ भगवान को समर्पित जिनप्रासाद बनवाया ! वि.सं. १५१८ के जेठ सुद १५, गुरवार का दिन मक्षीजी तीर्थ की सालगिरह के दिन के रुप में प्रसिद्ध है। इसके अलावा भेई, मंदसौर ब्रह्ममंडल, सामलिया (सेमालीया) धार, नगर, खेडी, चंडाउली वगेरे १६ स्थानों में १७ बड़े बडे जिन मंदिर बनवाये और अनेक धर्मकार्य किये ।

संग्रामसिंह को श्रुत के प्रति भी अगाध भक्ति थी। उसने वि.सं. १४७०, इस्वी १४१४ में तपगच्छ गगन में सूर्य समान आचार्य सोमसुंदरसूरिजी को मांडवगढ में चातुर्मास करवाया। उस चातुर्मास में उसने उनके श्रीमुख से भगवतीसूत्र का सटीक श्रवण किया। भगवतीसूत्र में जगह जगह 'गोयमा' यह शब्द कुल मिलाकर ३६ हजार बार आता है, जब जब 'गोयमा' शब्द आया तब उस वक्त संग्राम सोनी ने एक सोनामुहर, उसकी माता ने आधी सोनामुहर, उसकी पत्नी ने एक चौथाई (पावभर) सुवर्णमुद्रा रखकर उस परम पावन शब्द के प्रति अपना बहुमान व्यक्त किया। ३६ + १८ + ९ कुल ६३ हजार सोनामुहरें आचार्य भगवंत के चरणों में रखते हुए उन्हे स्वीकार करने की विनती की। आचार्यश्रीने 'साधु पैसों का परिग्रह नही रखते' कहकर इस राशि का उपयोग शास्त्र-आगमग्रंथ लिखवाने में करने की प्रेदणा दी। सोनी संग्रामसिंह ने उस तमाम राशि का उपयोग करते हुए सोने-रुपे की स्याही से सचित्र कल्पसूत्र और कालिकाचार्य कथा की कई प्रतियां करवायी। आचार्य भगवंत के साथ के तमाम मुनिओं को एक-एक प्रति अर्पण की। और अन्य संघों के ज्ञान भंडार में भी अलग अलग जगह पर प्रतियां सुरक्षित रखी।

मांडवगढ में वैसे भी अनेक सोनी परिवार बसे हुए थे। वि.सं. १५४३ मे वहां सोनी मांडण, सोनी नागराज, सोनी वर्धमान, सोनी पासदत्त और सोनी जिनदास, सोनी गडरमल, सोनी गोपाल इत्यादि जैन परिवारों के बारे में उल्लेख प्राप्त होता है।

सोनी संग्रामसिंह धनी एवं दानी था ... साथ ही ज्ञानी था, कवि था... और युद्ध भूमि पर अजेय वीर था।

मालवा के बादशाह मेहमूद ने दक्षिण के बादशाह निजाम शाह को जीतने के लिए वि.सं. १५२० में चैत्र सुद ६ के दिन शुक्रवार को, मांडवगढ से प्रयाण किया तब सोनी संग्राम भी उसके साथ गया था और बादशाह जब विजय प्राप्त करके वापस लौट रहा था तब गोदावरी के किनारे प्रतिष्ठानपुर (पैठण) मे आया तब कवि संग्राम सोनी ने वहां के जिनप्रासाद में जिनेश्वर के दर्शन करके 'बुद्धिसागर' नामक संस्कृत भाषा के काव्य ग्रंथ की रचना की। जिसके ४ तरंग (विभाग) एवं कुल ४११ श्लोक की रचना की थी।

१. धर्मतरंग २. नयनतरंग ३ व्यवहारतरंग ४. प्रकीर्णकतरंग के माध्यम से निम्न विषयों पर सुंदर विवेचना की है ।

प्रथम तरंग मे : धर्म, दया, सत्य, अस्तेय, परस्त्रीत्याग, परिग्रह, गृही, ब्रह्मचारी, सुसाधु-इन्द्रियजय, गुरु, उपासक शिष्य, मातापिता की आज्ञा, कविवाणी इत्यादि के बारे में वर्णन है ।

द्वितिय तरंग में : स्वेदशी कवियों की प्रशंसा, राजचर्या, रानी, कुमार, ·ांत्री, अधिकारी, प्रजासेवक, सब को उपदेश, अश्वलक्षण, गजलक्षण वगैरह के विषय में विवेचन है ।

तृतीय तरंग में : विश्वास, धनप्रशंसा, शयन, स्त्री अविश्वास, स्त्री-प्रशंसा, वास्तुलक्षण, व्यवहार की बातों की जानकारी है ।

चतुर्थ प्रकीर्णक तरंग में : देहरक्षा, वैद्यकसार, गर्भ मे देह रचना, छहऋतु की चर्या, उषापान, हरडे का महत्त्व, पानी के तीन प्रयोग, ज्योतिषसार, शुकुनसार, सामुद्रिक सार, स्त्री सामुद्रिक, रत्न मोती, पद्मराग नागमणि की परीक्षा, वैराग्य, चार तरह के ध्यान, चार योग, नौ चक्र, कुंडलिनी, हठयोग, यम नियम, इत्यादि विषयों की विशद जानकारी के साथ ग्रंथ समाप्ति में सोनी वंश की प्रशस्ति, ग्रंथ की प्रशस्ति वगैर कर के ग्रंथ का समापन किया है।

कुल मिलाकर संग्राम सोनी बारहव्रत धारी श्रावक था । सच्चरित्रवान पुरुष था । वह कवि कल्पतरु था । कवित्व ने बारे में उसे पूर्ण ज्ञान था ।

अनेक ग्रंथो में अनेक आचार्य भगवंतो ने, रचनाकारों ने संग्राम सोनी के बारे में बहुत कुछ लिखा है । आज भी उनकी जिनभक्ति व श्रुतभक्ति कीर्तिकथाएं गायी जाती है । गिरनार महातीर्थ पर तो संग्रामसोनी की टूक के उपर सहस्त्रफणा पार्श्वनाथ भगवान का जिनालय आज भी उनकी कीर्ति को दोहरा रहा है । मालवी भाषा के लहजे में कहा जाए तो :

अणी रे जेरो कोई कोनी
जैसो वियो संग्राम सोनी !"

(जैन परंपरानो इतिहास भाग : ३ मे से संकलित
- संकलन एवं संवर्द्धन : भद्रबाहु विजय)

धर्मराधना व्यर्थ नहीं जाती

- आचार्यश्री पूर्णचन्द्रसूरिजी म.

शत्रुंजय के शिखर के शान, मान, आन और बान समान युगादिनाथ की यात्रा करनेवालें यात्रिको के लिए 'वाघणपोल' का नाम अंजान नही हो सकता ! 'वाघणपोल' का नाम कब से प्रख्यात हुआ इससे पूर्व इसका क्या नाम था वगैरह जानकारी मिलती नहीं है किंतु 'वाघणपोल' नाम किसलिए प्रचलित हुआ इसका इतिहास तो उपलब्ध ही है ।

आज से कुछ दशकपूर्व गिरिराज पर गहन हरियाली गहरी खाईयां, कल कल अहर्निश बहते झरने से पर्वत अपनी अलग पहचान से जानामाना था। और इसीलिए वहां तरह तरह की वनस्पतियां, औषधियां वगैरह ऊगती थी, तदुपरांत वहां हिंसक पशुओं की बस्ती भी थी । कुछ बरसों पूर्व गिरिराज के चित्रित पटों में दिखायी देते बाघ-सिंह जैसे पशु आज कल चित्रित हो रहे पटों में भी शायद बहुत ही कम मात्रा में दिखायी देते है । तब साक्षात् गिरिराज पर तो इन पशुओ का दर्शन सपनों में भी आज दुर्लभ हो चुके हो इस में ताज्जुबी किस बात की ? वर्तमान की इस वास्तविकता के बीच यदि किसी जो ऐसा कहें कि किसी जमाने में इस गिरिराज पर बाघ-सिंह की बस्ती थी और उनकी गर्जना सुनते ही यात्री भयभीत हो उठते थे, और दिनों तक यात्रा बंध रहती थी । तो इसे केवल कल्पना से ज्यादा कोई मानेगा नही । महत्त्व देगा नही । पर यह कोरी कल्पना नहीं है, वीर विक्रमसिंह का आज भी दिखायी देने वाला छोटा स्मृतिचिह्न या स्मारक (गुजराती में पालिया) और वाघणपोल के रुप में जानी जानेवाली जगह इस सच्चाई की साक्षी है कि बाघ, सिंह का इस गिरिराज पर आनाजाना अभी ताजे अतीत की ही एक वास्तविकता थी ।

भूतकाल के उन दिनों में गर्जन और चीख से अच्छे अच्छे को खून जमा देनेवाले और गिरिमार्ग को अवरुद्ध कर घूमते फिरते सिंह के डर से लम्बे अरसे तक यात्रा रुक गयी थी । बंद सी थी तब भाभी का ताना सुनकर जिसका साहस खिल उठा था, उस वीर विक्रम ने बहादुरी पूर्वक सिंह का सामना किया था और सिंह को भगाकर यात्रा मार्ग को निष्कंटक बनाया था,

उसकी स्मृति में आज भी एक स्मारक खड़ा है। उस इतिहास के साथ साथ ही लिखी जा सके वैसी एक घटना उन दिनों हुई कि जब एक बाघिन इस गिरिराज पर दिखायी दी। बाघिन के आने की बात फैलते ही पालीताणा थर्रा उठा। पूरे सौराष्ट्र में सन्नाटा फैल गया। यह बाघन आततायी नहीं वरन् अनुयायी बन कर आयी थी। कल्पना भी नहीं कर सकते वैसी इस तरह की बात की प्रतीति धीरे धीरे लोगों को होने लगी। सबी के दिल तसल्ली महसूस करने लगे। वह बाघिन युगदिनाथ की टूक की और मुँह रख कर स्थिर आसन में बेठ गयी। यह दृश्य जब चोरी छुपी से किसी ने देखा तो ऐसा भी लगा कि सो चूहे मारकर दिल्ली अब हजर करने बैठी है।' जिसके रोंये रोंये में खुन्नस खोलता हो, चहेरे पर भयानकता रास रचाती हो और जीभ जाने कातिलाना तलवार की भांति लपलपती हो, वैसी बाघिन बिल्कुल शांत होकर बैठ जाए यह बात मानने को कोई तैयार नहीं था। पर यह बात कुछ ही दिनों में वास्तविक हकीकत की भांति फैल गयी। तब कुछ साहसिकों ने डरते डरते भी बाघिन को देखने जाने की हिंमत की जुटाई पर बाघिन की शांत-प्रशांत मुद्रा पर वे विश्वास तो नहीं कर सकें। सभी को लगा की बगुले की ध्यान-माया से ज्यादा कुछ भी नहीं हो सकता।

नों टूक (गिरिराज पालीताना पर के मंदिरों का एक समूह) में रहनेवाले पूजारियों में जो थोडे बहादुर थे, उन्हे लगा कि फैली हुई इस बात की सच्चाई को स्वयं परखने में हर्ज क्या है ? वे साशंक मन से गुपचुप उस बाघिन को बार बार देखने आने लगे। कुछ ही दिनों में उन्हे तसल्ली हो गयी कि यह बाघिन किसी और ही मिट्टी की बनी हुई है। कितने ही दिनों से खाये पिये बगैर यों बैठी हुई यह बाघिन अनशन करके देहत्याग करना तो नहीं मांगती है ना ?

कौतूहल की जगह विश्वास ने ले ली। कुछ दिनों बात तो पुजारियों की भांति यात्रिक भी बिना किसी डर के बाघिन के इर्दगिर्द आने जाने लगे। बात को पंख लग गये ! कौतूहल की जगह विश्वास और विश्वास से आगे बढकर अब भक्ति को जगरावा होने लगा। दिनों से खाये पिये बगैर बैठी हुई बाघिन पर कईयों का दया सभर भक्ति जगी वे उसके समक्ष भोजन सामग्री

भेंटरुप धरने लगे और पानी के पात्र छलकाने लगे। पर बाघिन नें तो जैसे चौविहार उपवास की भीष्म प्रतिज्ञा ले रखी हो, वैसा माहोल था। वो भोजन को सूंघती ही नहीं थी और नहीं पानी के पात्र की और नजर डालती थी। दिन पर दिन गुजरने लगे। इधर बाघिन और अनशन की बात बतंगड होकर चमत्कार की भांति चारों और फैलने लगी। इधर जिसके करीब जानें में भी डर लगता हो वैसी बाघिन के इर्दगिर्द दर्शनार्थियों की कतारे लगने लगी। वैसे तो बाघिन को साक्षात् देख पाना यह संभव ही नहीं था। पर जब अनशन पर बैठी हुई बाघिन के दर्शन की बात आये तब फिर कौन भला उस मौके को हाथ से जाने देगा ?

जो जो यात्री बाघिन के दर्शन करते, उनके दिल से ऐसे अव्यक्त शब्द सरकने लगे कि 'इस बाघिन ने गत जन्म में आराधना के साथ साथ किसी तरह की विराधना भी की होगी ? विराधना से उसे बाघिन की देह दी... जबकि की हुई आराधना की फलश्रुति के रुप उसे जातिस्मरण ज्ञान मिला होगा... इसलिए अनशन के साथ देहत्याग करने की भावनापूर्वक अभी यह बाघिन शत्रुंजय के शिखर पर उपवास में आगे बढ रही है, वैसा प्रतीत हो रहा है।"

एक, दो, तीन, चार नहीं वरन् ७०-७० दिन बीत गये। फिर भी भूख-प्यास की दरकार किये बगैर दादा की टूक की और निगाह की अनिमेष बनाये रखने में उस बाघिन को जब सफलता हांसिल होती रही तब सभी को इस बात का भरोसा जम गया कि आराधना कभी भी अफल नहीं होती है। इसकी द्दढ प्रतीति यह बाघिन अनशन के जरिये करवा रही है। उसके दर्शन तो करने ही चाहिए इसके जीवन को धन्य मानना चाहिए और इस तरह बाघिन की मौत होतो उसे महोत्सव की भांति मनाना चाहिए।

बराबर ७८वें दिन जब अपने अनशन का अखंड रखते हुए बाघिन ने देह छोडा तब उसकी मौत की खबर चारों और फैल गई और शत्रुंजय के उस शिखर पर भाविक भक्तों की भीड एकत्र हो गयी। चंदन की चिता ने उस बाघिन की काया को भस्मीभूत कर डाली पर अनशन के द्वारा बाघिन के कीर्ति देह का जो पुनर्जन्म हुआ ... वह उस दिन से 'बाघिनपोल' के रूप

में प्रसिद्ध होने लगी । और आज भी उतना ही मशहूर है ।

आराधना या विराधना निष्फल नही जाती है । आराधना के पश्चात् विराधना हो गयी हो, तो उसके बुरे नतीजे अवश्य उठाने होगें पर आराधना अपने अच्छे फल का रसास्वाद करवाने वहां उपस्थित हो ही जाती है । इस सत्य का उद्घोष 'बाघिनपोल' से हंमेशा अनवरत उठ रहा है, पर कितने यात्री इसे सुन पा रहे होंगे ।

जिनालय एवं चरणपादुका देरी का निर्माण कार्य

छिपावसही टूक में स्थित श्री नेमीनाथ भगवान के जिनालय का और श्री अजित शांति देरी के पीछे रायण वृक्ष के नीचे श्री आदेश्वर भगवान की चरणपादुका की देरी का खनन विधि ता. २०-०४-२०१५ के दिन संपन्न हुआ है । खननविधि आचार्य श्री अक्षयबोधिसुरीश्वरजी महाराज साहेब एवं पु.पू.पन्यास श्री प्रसन्नचंद्र सागरजी महाराज साहेब की निश्रा में आयोजित हुइ थी ।

लाभार्थी परिवार

नेमीनाथजी भगवान की जिनालय - श्रीमती वादीबाई घेवरचंदजी
ह. श्री शिवराजजी-बेंगलोर

आदेश्वर भगवान की चरणपादुका - श्री दक्षाबेन शैलेषभाई परिख - मुंबई

ता. ११-०५-२०१५के दिन जिनालय एवं देरी का शिलान्यास विधि संपन्न हुए है जिसके लाभार्थी है ।

प्रथम शिलान्यास	:	श्रीमती वादीबाई घेवरचंदजी, ह. श्री शिवराजजी-बेंगलोर
द्वितीय शिलान्यास	:	श्री दिनेशभाई मोहनलाल शाह
तृतीय शिलान्यास	:	श्री शैलेषभाई अमरचंद जवेरी
चतुर्थ शिलान्यास	:	श्री प्रवीणचंद रतनचंद जवेरी
पंचम शिलान्यास	:	श्री शा. रिखवचंदजी रायचंदजी साकरीया ह. नवीनभाई
षष्टम शिलान्यास	:	श्री शिवजी करमशीभाई सतरा ह. दुगरसिंहभाई
ससय शिलान्यास	:	श्री गिरिराज दादा परिवार ह. श्री निपुणभाई - मुंबई
अष्टम शिलान्यास	:	श्री राजेशभाई शामजीभाई ह. अमृताबेन
नवम शिलान्यास	:	श्री भारतभाई कांतिलाल शाह (वालम)

तीर्थ व्यवस्था, सलाह सूचन, दान-सहयोग, जीवदया, पांजरापोल, जीर्णोद्धार वगैरह प्रवृत्तियों के लिए पेढी के संपर्क सूत्र

शेठ आणंदजी कल्याणजी ट्रस्ट
श्रेष्ठि लालभाई दलपतभाई भवन,
२५, वसंतकुंज, नवा शारदा मंदिर रोड, पालडी, अहमदाबाद-३८० ०२७
फोन : (०७९) २६६४४५०२, २६६४५४३०
समय : सुबह ११ से १-३० व् दोपहर २ से ३-३०
Telefax : 079-26608244I • Email : shree_sangh@yahoo.com
(रविवार एवं अवकाश के अतिरिक्त)

शेठ आणंदजी कल्याणजी ट्रस्ट
पटनी की खड़की, झवेरीवाड, अहमदाबाद-३८० ००१
समय : सुबह ११ से १-३० व दोपहर २ से ३-३० तक
फोन : (०७९) २५३५६३१९
(रविवार एवं अवकाश के अतिरिक्त)

श्री कयवनभाई हेमेन्द्रभाई संघवी
विश्रुत जेम्स, ७०१-२ ए अमन चेम्बर्स ७वा माला,
ओपेरा हाउस, मुम्बई-४०० ००४
फोन : (०२२) ३२९६१८७०
समय : दोपहर १२ से ५ (अवकाश दिनों के अतिरिक्त)

शेठ आणंदजी कल्याणजी ट्रस्ट
श्री रजनीशांति मार्ग, पालीताणा-३६४ २७०
ओपेरा हाउस, मुम्बई-४०० ००४
Tele : 02848–252148, 253656
समय : सुबह ९ से १२.३० दोपहर २.३० से ७

और अंत में

आपको 'श्री आनंदकल्याण' का यह अंक अच्छा लगा ? क्या अच्छा लगा ? कुछ पसंद न भी आया हो तो वह भी हमें खुले मन से पर खुरदरी नहीं अपितु नरम कलम से लिख भेजें। हमें अवश्य अच्छा लगेगा। पत्रव्यवहार के लिए ई-मेईल माध्यम इच्छनीय एवं उपयुक्त रहेगा।
anandkalyanmagazine@gmail.com

जैन धर्मकी दो मुख्य विचारधाराओ के समन्यय के लिए अहमदाबाद में उपस्थित अग्रणी महानुभाव

दॉयेसे (१) शेठ श्री श्रीपालभाई शाह (ट्रस्टी, आणंदजी कल्याणजी ट्रस्ट) (२) शेठ श्री सुधीरभाई महेता (ट्रस्टी, आणंदजी कल्याणजी ट्रस्ट)

(३) शेठ श्री वसंतभाई दोशी (उपप्रमुख, भारतवर्षीय दिगंबर तीर्थक्षेत्र कमिटि) (४) शेठ श्री प्रकाशभाई झवेरी (कार्यकारी निदेशक, श्वे.मू. जैन तीर्थरक्षा ट्रस्ट)

(५) शेठ श्री सुधीरजी जैन (अध्यक्ष, भारतवर्षीय दिगंबर तीर्थक्षेत्र कमिटि) (६) शेठ श्री संवेगभाई लालभाई (ट्रस्टी, आणंदजी कल्याणजी ट्रस्ट) (७) शेठ श्री डॉ. संजयभाई (कार्यकारी निदेशक, श्वे.मू. जैन तीर्थरक्षा ट्रस्ट)

(८) शेठ श्री कटारियाजी (गुजरात दिगंबर जैन समाजके अग्रणी) (९) शेठ श्री पंकजजी जैन (उपाध्यक्ष, भारतवर्षीय दिगंबर तीर्थक्षेत्र कमिटि)

ह्रीँ

BOOK - POST

To,

श्री आनंद कल्याण (त्रिमासिक पत्र)

श्रेष्ठी लालभाई दलपतभाई भवन, २५, वसंतकुंज,

नवा शारदा मंदिर रोड, पालडी, अहमदाबाद - ३८० ००७.

E-mail : anandkalyanmagazine@gmail.com